समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 26 August 2026

उगांडा का भारतीय पलायन : इदी आमिन की तानाशाही और अमेरिका-भारत के आर्थिक सबक

Sanket Morankar Published on 22 Sep 2025

1972 में उगांडा के तानाशाह **इदी आमिन (Idi Amin)** ने एक ऐतिहासिक और विवादास्पद आदेश जारी किया: देश में रहने वाले भारतीयों और एशियाई समुदाय को 90 दिनों के भीतर उगांडा छोड़ने का आदेश। यह घटना आज भी **वैश्विक अर्थव्यवस्था और भारतीय प्रवासी समुदाय के इतिहास** में अहम मानी जाती है।

इदी आमिन का मानना था कि उगांडा की अर्थव्यवस्था पर **भारतीय व्यापारियों और व्यवसायियों का अत्यधिक प्रभाव** है। उन्होंने घोषणा की कि सभी भारतीय नागरिकों को उनके संपत्ति और व्यवसाय छोड़कर उगांडा छोड़ना होगा।

- लगभग **60,000 भारतीय और एशियाई परिवार** प्रभावित हुए।
- इनमें व्यापारी, पेशेवर और छोटे व्यवसायी शामिल थे।
- लोग तत्काल पैसों और संपत्ति के बिना अपने देश से निकाले गए।

अमरीका और भारत दोनों ने इस घटनाक्रम पर नज़दीकी नजर रखी, क्योंकि यह **आर्थिक और राजनीतिक संकट** में बदल सकता था।

भारतीय समुदाय उगांडा की अर्थव्यवस्था में केंद्रीय भूमिका निभा रहा था। उनके निष्कासन से:

- व्यापार, बैंकिंग और उद्योग प्रभावित हुए।

- छोटे और बड़े व्यवसाय बंद हुए, जिससे बेरोजगारी बढ़ी।
- देश में आर्थिक अस्थिरता और निवेश में गिरावट आई।

विशेषज्ञों का मानना है कि भारतीय व्यवसायियों की अनुपस्थिति ने उगांडा की **वित्तीय प्रणाली को झटका** दिया।

अमेरिका समेत अन्य देशों ने इस पलायन को **आर्थिक जोखिम और मानवीय संकट** दोनों के रूप में देखा।

- अमेरिकी अधिकारियों ने भारतीयों के पलायन से पैदा होने वाले **व्यापार और निवेश असंतुलन** का आकलन किया।
- अमेरिका ने अमेरिकी कंपनियों और निवेशकों को सलाह दी कि उगांडा की परिस्थिति में सतर्क रहें।
- भारतीय प्रवासी अमेरिका और ब्रिटेन समेत अन्य देशों में शरण लेने लगे, जिससे ये देशों की अर्थव्यवस्था और समाज पर भी प्रभाव पड़ा।

भारतीय नागरिकों के लिए पलायन कठिन था।

- सीमित समय में संपत्ति बेचनी पड़ी, अक्सर **संपत्ति का मूल्य असंतुलित था**।
- कई लोग ब्रिटेन, कनाडा, अमेरिका और भारत लौटने के लिए मजबूर हुए।
- प्रवासियों ने नए देशों में रोजगार और व्यवसाय स्थापित करने में लंबा संघर्ष किया।

इस पलायन ने भारतीय समुदाय के **लचीलापन और उद्यमिता** को प्रदर्शित किया।

भारतीय सरकार ने अपने नागरिकों की मदद के लिए तत्काल कदम उठाए।

- कई भारतीय परिवारों को राहत और पुनर्वास की सुविधा दी गई।
- अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने उगांडा सरकार से मानवीय दृष्टिकोण अपनाने की अपील की।

विशेषज्ञों का कहना है कि यह घटना भारत और अमेरिका के बीच **आर्थिक और कूटनीतिक संबंधों** को भी प्रभावित कर सकती थी। अमेरिका ने भारत के साथ सहयोग बनाए रखा, ताकि शरणार्थियों और वैश्विक निवेशों को समर्थन मिल सके।

उगांडा का भारतीय पलायन आज भी **अर्थव्यवस्था और प्रवासन नीति** के अध्ययन में उदाहरण के तौर पर लिया जाता है।

- छोटे और मध्यम व्यवसायी किस हद तक अर्थव्यवस्था को स्थिर रख सकते हैं, यह साफ हुआ।
- विदेशों में भारतीय समुदाय के योगदान ने वैश्विक व्यापार में उनकी महत्वता को रेखांकित किया।
- सरकारों और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के लिए यह **सुरक्षा और आर्थिक विविधता** का सबक है।

इस पलायन ने भारतीय समुदाय की **सांस्कृतिक पहचान और एकजुटता** को भी उजागर किया।

- प्रवासी भारतीयों ने नई भूमि में शिक्षा, व्यवसाय और सामाजिक योगदान दिया।
- अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा में भारतीय समुदाय ने शिक्षा और उद्योग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- यह पलायन आज भी भारतीय डायस्पोरा के इतिहास में **गौरव और संघर्ष** का प्रतीक है।

उगांडा के इदी आमिन के आदेश पर भारतीयों का पलायन केवल एक राजनीतिक घटना नहीं थी, बल्कि इसका **आर्थिक, सामाजिक और वैश्विक असर** भी महत्वपूर्ण था।

- भारतीय व्यवसायियों की अनुपस्थिति ने उगांडा की अर्थव्यवस्था को झटका दिया।
- अमेरिका और अन्य देशों ने इसे आर्थिक जोखिम के रूप में देखा।
- प्रवासी भारतीयों ने नई जमीन पर अपने कौशल और उद्यमिता से समाज और अर्थव्यवस्था को नया आयाम दिया।

यह ऐतिहासिक घटना आज भी **आर्थिक नीति, अंतरराष्ट्रीय संबंध और प्रवासन अध्ययन** में अध्ययन का प्रमुख विषय बनी हुई है।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.